



दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी।

नमो नमो दुर्गे दुःख हरनी ॥

निरंकार है ज्योति तुम्हारी।

तिहूँ लोक फैली उजियारी ॥

शशि ललाट मुख महाविशाला।

नेत्र लाल भृकुटि विकराला ॥

रूप मातु को अधिक सुहावे।

दरश करत जन अति सुख पावे ॥

तुम संसार शक्ति लै कीना।

पालन हेतु अन्न धन दीना ॥

अन्नपूर्णा हुई जग पाला।

तुम ही आदि सुन्दरी बाला ॥

प्रलयकाल सब नाशन हारी।

तुम गौरी शिवशंकर प्यारी ॥

शिव योगी तुम्हरे गुण गावें।
ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें ॥

रूप सरस्वती को तुम धारा।
दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा ॥

धरयो रूप नरसिंह को अम्बा।
परगट भई फाड़कर खम्बा ॥
रक्षा करि प्रह्लाद बचायो।
हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो ॥

लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं।
श्री नारायण अंग समाहीं ॥

क्षीरसिन्धु में करत विलासा।
दयासिन्धु दीजे मन आसा ॥

हिंगलाज में तुम्हीं भवानी।
महिमा अमित न जात बखानी ॥
मातंगी अरु धूमावति माता।
भुवनेश्वरी बगला सुख दाता ॥

श्री भैरव तारा जग तारिणी।
छिन्न भाल भव दुःख निवारिणी ॥

केहरि वाहन सोह भवानी।
लांगुर वीर चलत अगवानी ॥

कर में खप्पर खड्ग विराजै।
जाको देख काल डर भाजै ॥
सोहै अस्त्र और त्रिशूला।
जाते उठत शत्रु हिय शूला ॥

नगरकोट में तुम्हीं विराजत।
तिहुंलोक में डंका बाजत ॥

शुंभ निशुंभ दानव तुम मारे।
रक्तबीज शंखन संहारे ॥

महिषासुर नृप अति अभिमानी।
जेहि अघ भार मही अकुलानी ॥
रूप कराल कालिका धारा।
सेन सहित तुम तिहि संहारा ॥

परी गाढ़ संतन पर जब जब।
भई सहाय मातु तुम तब तब ॥

अमरपुरी अरु बासव लोका।
तब महिमा सब रहें अशोका ॥

ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी।
तुम्हें सदा पूजें नर-नारी ॥
प्रेम भक्ति से जो यश गावें।
दुःख दारिद्र निकट नहिं आवें ॥

ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई।

जन्म-मरण ताकौ छुटि जाई ॥

जोगी सुर मुनि कहत पुकारी ।
योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी ॥

शंकर आचारज तप कीनो ।
काम अरु क्रोध जीति सब लीनो ॥
निशिदिन ध्यान धरो शंकर को ।
काहु काल नहिं सुमिरो तुमको ॥

शक्ति रूप का मरम न पायो ।
शक्ति गई तब मन पछितायो ॥

शरणागत हुई कीर्ति बखानी ।
जय जय जय जगदम्ब भवानी ॥

भई प्रसन्न आदि जगदम्बा ।
दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा ॥
मोको मातु कष्ट अति घेरो ।
तुम बिन कौन हरै दुःख मेरो ॥

आशा तृष्णा निपट सतावें ।
रिपू मुरख मौही डरपावे ॥

शत्रु नाश कीजै महारानी ।
सुमिरौं इकचित तुम्हें भवानी ॥

करो कृपा हे मातु दयाला ।

ऋद्धि-सिद्धि दै करहु निहाला।
जब लागि जिऊं दया फल पाऊं ।
तुम्हरो यश मै सदा सुनाऊं ॥

दुर्गा चालीसा जो कोई गावै।
सब सुख भोग परमपद पावै॥

देवीदास शरण निज जानी।
करहु कृपा जगदम्ब भवानी॥

॥ इति श्री दुर्गा चालीसा सम्पूर्ण ॥

PDF by pmyojanahindime.in